Cheat Guess 2026 (Hindi) – Sci,Arts,Commerce

गद्य खंड :-

1. बातचीत - बालकृष्ण भट्ट निबंध (ललित)
2. उसने कहा था - चन्द्रधर शर्मा गुलेरी कहानी 1915
3. संपूर्ण क्रांति - 'जयप्रकाश नारायण ऐतिहासिक भाषण
4. अर्धनारीश्वर - रामधारी सिंह दिनकर निबंध
5. रोज - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय कहानी (गैग्रीन)
6. एक लेख और एक पत्र - भगत सिंह निबंध और पत्र
7. ओ सदानीरा - जगदीशचंद्र माथुर निबंध (बोलते क्षण से)
8. सिपाही की माँ - मोहन राकेश एकांकी (अंडे के छिलके)
9. प्रगीत और समाज - नामवर सिंह निबंध (वाद विवाद संवाद)
10. जूठन - ओमप्रकाश बाल्मीकि आत्मकथा
11. हँसते हुए मेरा अकेलापन - मलयज डायरी लेखन
12. तिरिछ - उदय प्रकाश कहानी आधुनिक त्रासदी
13. शिक्षा - जे. कृष्णमूर्ति

काव्यखंड

1. कड़बक - मलिक मुहम्मद जायसी भक्तिकाल (प्रेममार्गी) (पद्मावत)
2. पद - सूरदास
भक्तिकाल (कृष्ण भक्तिशाखा) (सूरसागर)
3. पद - तुलसीदास
भक्तिकाल (रामभक्तिशाखा) (विनय पत्रिका)
4.छप्पय - नाभादास
भक्तिकाल (रामभक्तिशाखा) (भक्तमाल)
5. कवित्त - भूषण (रीतिकाल) (रीतिबद्ध)
6. तुमुल कोलाहल कलह में - जय शंकर प्रसाद, आधुनिक काल (छायावाद) (कामायनी)
7. पुत्र-वियोग - सुभद्रा कुमारी चौहान, आधुनिक काल (राष्ट्रीय भाव धारा) (मुकुल)
8. उषा - शमशेर बहादुर सिंह आधुनिक काल (प्रयोगवादी)
9. जन-जन का चेहरा - गजानन माधव मुक्तिबोध (आधुनिक काल) (प्रयोगवादी)
10. अधिनायक - रघुवीर सहाय आधुनिक काल (नई कविता) (आत्महत्या के विरोध)
11. प्यारे नन्हें बेटे को - विनोद कुमार शुक्ल (आधुनिक काल) (वह आदमी कोट पहनकर)
12. हार-जीत - अशोक वाजपेयी (आधुनिक काल) (कही नहीं वहीं)
13. गाँव का घर - ज्ञानेन्द्रपति (आधुनिक काल) (संदिग्ध)

वर्णों का उच्चारण स्थान

उच्चारण स्थान(नाम)	स्वर	व्यंजन	अंतस्थ	ऊष्म
1.कण्ठ (कंठ्य)	अ,आ	क,ख,ग,घ,ङ	-----	ह,अ:
2.तालु (तालव्य)	इ,ई	च,छ,ज,झ,ञ	य	श
3.मूर्धा (मूर्धन्य)	ऋ	ट, ठ, ड, ढ, ण	र	ष
4.दन्त (दंत्य)	ऌ	त, थ, द, ध, न	ल	स
5.ओष्ठ (ओष्ठ्य)	उ,ऊ	प फ ब भ म	-----	-----
6. नासिका (अनुनासिका)	-----	अं,ङ, ञ, ण, न, म	-----	-----
7. कण्ठतालु (कंठ तालव्य)	ए,ऐ	-----	-----	-----
8.कण्ठोष्ठ्य (कंठौष्ठ्य)	ओ,औ	-----	-----	-----
9. दन्तोष्ठ्य (दंतौष्ठ्य)	-----	-----	व	-----

नोट:-(i) प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, और पांचवाँ वर्ण **अल्पप्राण व्यंजन** हैं। जैसे- क, ग, ङ; ज, ञ; ट, ड, ण; त, द, न; प, ब, म
(ii) महाप्राण:- ये वर्ण मुख से वायु-प्रवाह के साथ बोले जाते हैं. इनकी संख्या 15 होती है. ये हैं: ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, ढ़, श, ष, स, ह

आवेदन पत्र

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय
क, ख. ग. विद्यालय, पटना
दिनांक: 8 अगस्त, 2025
विषय - फीस माफ़ी हेतु

श्रीमान/महोदय,

आप से विनम्र निवेदन है कि मैं आप के विद्यालय के कक्षा 12वीं का छात्र हूँ। मेरे पिताजी मजदूरी का कार्य करते हैं। जिसके चलते उनकी कोई निश्चित आय नहीं है। हमारे परिवार में उनकी आमदनी से ही पूरे परिवार का गुजर बसर होता है। मेरे अलावा भी परिवार में 5 अन्य सदस्य हैं, जिनके भरण पोषण की जिम्मेदारी भी पिताजी पर ही है। ऐसे में मेरी फीस भरने के लिए वो समर्थ नहीं हैं। मेरे पिछले साल बोर्ड परीक्षा में 65 प्रतिशत आये थे। साथ ही खेल कूद में भी मैं हमेशा योग्य रहा हूँ।

अतः आप से प्रार्थना है कि मेरी विद्यालय की फीस पूर्णतः माफ़ करने की कृपा करें। इसके लिए मैं आप का सदा आभारी रहूंगा।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नाम -
कक्षा-
क्रमांक –

बातचीत [Telegram - @BsebNow]

बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'बातचीत' में वाक्शक्ति के महत्व और बातचीत के रूपों को सरल ढंग से समझाया गया है। लेखक बताते हैं कि वाणी मनुष्य को गूँगेपन से बचाती है और विचार साझा करने की शक्ति देती है। स्पीच उत्साह जगाती है, जबकि बातचीत मन को हल्का और प्रसन्न करती है। दो लोगों की बातचीत सबसे सच्ची मानी जाती है; तीन में गोपनीयता घटती है और चार से अधिक में औपचारिकता बढ़ जाती है। अंत में लेखक कहते हैं कि सबसे श्रेष्ठ बातचीत आत्म-चिंतन है, जिसमें मनुष्य स्वयं से संवाद कर अपने भीतर की शक्ति को जानता है।

उसने कहा था [Google – BiharBoard.School]

प्रस्तुत कहानी उसने कहा था के लेखक चन्द्रधर शर्मा गुलेरी हैं। यह कहानी जमादार लहना सिंह के साहस, प्रेम और त्याग को दर्शाती है। बचपन में उसकी एक लड़की से मुलाकात होती है, जो बाद में सूबेदार हजारा सिंह की पत्नी बनती है। युद्ध से पहले वह लहना सिंह से अपने पति और पुत्र की रक्षा का वचन लेती है। युद्ध में लहना सिंह अद्भुत वीरता दिखाता है और अपने साथियों को बचाता है। स्वयं घायल होने पर भी वह सूबेदार को पहले भेजता है। अंत में वचन निभाते हुए वह वीरगति को प्राप्त होता है।

संपूर्ण क्रांति [Telegram - @BsebNow]

'संपूर्ण क्रांति' जयप्रकाश नारायण के 5 जून 1974 के ऐतिहासिक भाषण पर आधारित है, जिसने जनता में अन्याय और भ्रष्टाचार के खिलाफ बड़ी जागृति पैदा की। वे मानते थे कि लोकतंत्र तभी मजबूत होगा जब जनता शांतिपूर्वक सभा, प्रदर्शन और अपनी बात रखने का अधिकार खुले रूप से प्रयोग कर सके।

जेपी का कहना था कि चुनाव प्रक्रिया निष्पक्ष नहीं होती और मतदाता का उम्मीदवार चुनने तथा बाद में उस पर नियंत्रण रखने में कोई प्रभाव नहीं रहता। इसलिए वे संगठित जनता, छात्र संघर्ष समितियों और स्वतंत्र जन-समितियों के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक और नैतिक परिवर्तन लाकर 'संपूर्ण क्रांति' स्थापित करना चाहते थे।

अर्धनारीश्वर [Google – BiharBoard.School]

'अर्द्धनारीश्वर' निबंध में बताया गया है कि पुरुष और नारी एक ही शक्ति के दो रूप हैं। दोनों के गुण-दोष अलग नहीं होते। अगर पुरुष नारी के गुण अपनाए तो वह और श्रेष्ठ बनता है। नारी की पराधीनता खेती के आरम्भ के साथ बढ़ी, जब पुरुष बाहर और नारी घर के कामों में सीमित हो गई।

निबंध में यह भी कहा गया है कि समाज ने पुरुष को बल और नारी को कोमलता का प्रतीक बना दिया, पर वास्तव में दोनों का कर्मक्षेत्र समान है। नर-नारी के जीवन का उद्देश्य एक है और वे तभी पूर्ण होते हैं जब एक-दूसरे के गुणों को स्वीकार करते हैं।

रोज [Telegram - @BsebNow]

कहानी 'रोज' में वैवाहिक जीवन की नीरसता, रोज़मर्रा की थकान और संबंधों में आती दूरी को सरल रूप में दिखाया गया है। मालती और महेश्वर का जीवन दो वर्षों बाद उत्साहहीन हो जाता है। महेश्वर अपनी डॉक्टरी में व्यस्त है और मालती केवल जिम्मेदारियाँ निभाती है। बच्चा टिटी भी रोज़ बिस्तर से गिर जाता है, जो परिवार की अव्यवस्था और थकान का प्रतीक है।

यह कहानी बताती है कि नियमित जीवन की एकरसता रिश्तों की गर्माहट कम कर देती है। बाहर की दुनिया से जुड़ने की मालती की चाह भी उसी खालीपन को दर्शाती है। 'रोज' शीर्षक जीवन की उसी यांत्रिक दिनचर्या और भावनात्मक दूरी का प्रतीक है।

ओ सदानीरा [Google – BiharBoard.School]

'ओ सदानीरा' में गंडक नदी के स्वभाव और उसके बदलते रूप का वर्णन है। यह नदी बहुत चंचल है, बार-बार बहाव बदलती है और अपने किनारे बसे स्थानों को मिटा देती है। पहले इसके किनारे घने जंगल और शांत वातावरण था, पर समय के साथ सब बदल गया।

लेखक बताते हैं कि कई संत यहाँ तप करते थे, पर नदी की अनिश्चितता के कारण कोई स्थायी तीर्थ या मंदिर नहीं बन पाए। आज भी गंडक घाटी में पुराने चौर और मन जैसी जगहों के अवशेष दिखाई देते हैं।

सिपाही की माँ [Telegram - @BsebNow]

'सिपाही की माँ' मोहन राकेश की एक भावनात्मक एकांकी है। इसमें बिशनी नाम की माँ अपने बेटे मानक के सहारे अपनी बेटी की शादी के सपने देखती है। मानक सिपाही बनकर युद्ध में गया है, ताकि कुछ पैसे कमा सके, पर माँ को युद्ध की असली भयावहता समझ नहीं आती।

घर में गरीबी, चिंता और इंतज़ार बना रहता है। माँ और बेटी दुःख के बीच भी उम्मीद नहीं छोड़ते। एकांकी का अंत इस विश्वास पर होता है कि मानक एक दिन ज़रूर लौटेगा।

. हँसते हुए मेरा अकेलापन [Google – BiharBoard.School]

यह मलयज की डायरी-साहित्य पर आधारित रचना है, जिसमें लेखक अपने भीतर के संघर्ष, अनुभव और रचनात्मक सोच को सरल रूप में व्यक्त करता है। उसके अनुसार मनुष्य केवल यथार्थ को जीता नहीं, बल्कि उसे रचता भी है। रचा हुआ यथार्थ व्यक्ति के अनुभवों और समाज से मिले प्रभावों का मेल होता है।

डायरी लिखना एक कठिन और गहरा काम है, क्योंकि इसमें व्यक्ति अपने जीवन, विचार और संघर्षों को सच्चाई से दर्ज करता है। मलयज बताते हैं कि रचना और जीवन दोनों एक-दूसरे को बनाते और बदलते हैं, और इसी से मानवीयता पूरी होती है।

तिरिछ [Telegram - @BsebNow]

'तिरिछ' कहानी के लेखक उदय प्रकाश हैं। यह एक आधुनिक त्रासदी और जादुई यथार्थ पर आधारित कहानी है। कहानी नई पीढ़ी के बेटे की दृष्टि से लिखी गई है, जिसमें उसके गाँव में रहने वाले बाबूजी शहर जाते हैं। शहर का कठोर, स्वार्थी और अमानवीय माहौल उन्हें भीतर से तोड़ देता है। बदलते समय में गाँव और शहर, पुरानी और नई पीढ़ी के बीच गहरी खाई दिखती है। बाबूजी इस नए यथार्थ के शिकार बनते हैं। 'तिरिछ' एक प्रतीक है, जो संवेदनहीनता, हिंसा और अमानवीय आधुनिकता को दर्शाता है।

शिक्षा [Google – BiharBoard.School]

जे. कृष्णमूर्ति कहते हैं कि शिक्षा का असली उद्देश्य मनुष्य को स्वतंत्र, निडर और संवेदनशील बनाना है। शिक्षा हमें प्रेम, सहयोग, करुणा और जिम्मेदारी की भावना देती है। यह हमारे व्यक्तित्व को विकसित करती है और हमें संकीर्ण सोच से बाहर निकालती है।

सच्ची शिक्षा जीवन को समझना सिखाती है, सिर्फ नौकरी या व्यवसाय के योग्य बनाना नहीं। सत्य की खोज व्यक्ति को स्वयं करनी होती है। ध्यान उस भीतर की रोशनी की तरह है, जो सही मार्ग दिखाती है और मन को शांत बनाती है।

कड़बक [Telegram - @BsebNow]

कवि मुहम्मद एक-आँख वाले होते हुए भी अद्भुत काव्य रचते हैं। लोग उनके रूप को नहीं, उनकी कला को सम्मान देते हैं। वे कहते हैं कि जैसे खारा समुद्र अपार होता है और कच्ची धातु मैल से चमकती है, वैसे ही कमी के बाद भी गुण प्रकट होते हैं। कवि का एक नेत्र दर्पण की तरह निर्मल और सत्य है।

मुहम्मद अपने काव्य में रत्नसेन, पद्मावती, अलाउद्दीन जैसे पात्रों की प्रेम-कथा को भावपूर्ण रूप से जोड़ते हैं। सब पात्र दुनिया से चले गए, पर उनकी कहानी और यश आज भी जीवित है। जैसे फूल मुरझा जाता है पर उसकी सुगन्ध रह जाती है, वैसे ही अच्छे कर्म और सच्ची कला अमर रहती है।

पद [Google – BiharBoard.School]

सूरदास के प्रथम पद में भोर का सुंदर दृश्य दिखाया गया है। कमल और दूसरे फूल खिल गए हैं, कुमुद बंद हो गए हैं, पक्षी चहचहा रहे हैं और मुर्गे बाँग दे रहे हैं। गायें अपने बछड़ों को दूध पिलाने जल्दी-जल्दी भाग रही हैं। चाँद की रोशनी फीकी पड़ गई है और सूरज की किरणें फैल रही हैं।

सूरदास प्रेम से सोए हुए नन्हे कृष्ण को जगाते हैं। वे कहते हैं कि सब लोग जग चुके हैं, सुबह हो गई है। हे कमल-धारी कृष्ण, अब आप भी आँखें खोलिए और जाग जाइए।

छप्पय [Telegram - @BsebNow]

पहले छप्पय में नाभादास कबीर की भक्ति की प्रशंसा करते हैं। वे कहते हैं कि बिना भक्ति के कोई धर्म मूल्यवान नहीं। कबीर ने किसी धर्म का पक्ष नहीं लिया, सभी के हित की बातें कीं। उन्होंने जाति, वर्ण और दिखावे वाले धर्म को महत्व नहीं दिया।

दूसरे छप्पय में नाभादास सूरदास की मधुर कृष्ण-भक्ति का वर्णन करते हैं। सूर की कविता में प्रेम, माधुर्य और सुंदरता भरी है। उनकी दिव्य दृष्टि और गोप-गोपियों के संवाद मन को आकर्षित करते हैं। नाभादास ने दोनों विपरीत धाराओं के कवियों की सुंदर प्रशंसा की है।

कवित्त [Google – BiharBoard.School]

भूषण रीतिकाल के प्रसिद्ध वीर रस कवि हैं। पहले कवित्त 'इन्द्र जिमि' में उन्होंने छत्रपति शिवाजी की वीरता की प्रशंसा की है। कवि बताता है कि जैसे देवताओं और शक्तियों की विजय प्रसिद्ध है, उसी तरह शिवाजी भी सिंह की तरह पराक्रमी और शत्रुओं को हराने वाले योद्धा हैं।

दूसरे कवित्त 'निकसत म्यान' में भूषण राजा छत्रसाल की तेज तलवार और उनके शौर्य का वर्णन करते हैं। उनकी तलवार दुश्मनों को झट से परास्त कर देती है और रणभूमि में आतंक फैला देती है। पूरी कविता वीरता और भयानक रस का उत्कृष्ट उदाहरण है।

तुमुल कोलाहल कलह में [Telegram - @BsebNow]

'तुमुल कोलाहल कलह में' कविता में जयशंकर प्रसाद दिखाते हैं कि यह संसार शोर, चिंता और दुःख से भरा है। मन अक्सर थक जाता है और जीवन मरुभूमि जैसा सूखा व कष्टपूर्ण लगने लगता है। ऐसे कठिन वातावरण में मनुष्य को सच-मुच शांति नहीं मिल पाती।

लेकिन इस अशांत दुनिया में श्रद्धा ही मन को सुकून देती है। मनु को भी शोरगुल और दुखों के बीच श्रद्धा से ही प्रेम, शांति और शक्ति मिलती है। प्रसाद बताते हैं कि श्रद्धा मनुष्य के जीवन में आशा और राहत का सबसे बड़ा आधार है।

पुत्र-वियोग [Google – BiharBoard.School]

कविता 'पुत्र वियोग' में सुभद्रा कुमारी चौहान अपने हमेशा के लिए बिछुड़े बेटे को याद करके दुख व्यक्त करती हैं। वे उसके बचपन की सेवा, देखभाल, बीमारी में जागना, लोरी सुनाना और उसकी रक्षा के लिए देवताओं से प्रार्थना करने जैसी बातें याद कर रो पड़ती हैं। बेटे की मृत्यु ने उन्हें असहाय और टूट चुका बना दिया है।

बेटे के बिना उनका जीवन सूना हो गया है। संसार खुश है, पर माँ का मन उसकी याद में हर पल रोता है। वह जानती है कि पुत्र लौट नहीं सकता, फिर भी एक बार उसे देखने की इच्छा मन में बनी रहती है। माँ के लिए बेटे को भूल पाना असंभव है।

उषा [Telegram - @BsebNow]

कविता 'उषा' में उषाकाल का प्राकृतिक सौन्दर्य दिखाया गया है। सूर्योदय से पहले आकाश नीला, शांत और पवित्र लगता है। उगते सूर्य की लालिमा आकाश को ऐसे रंग देती है जैसे उस पर लाल केसर या खड़िया मल दी गई हो।

उषा का यह दृश्य मन को आकर्षित और प्रसन्न करता है। जैसे ही सूर्य की किरणें फैलती हैं, यह जादुई सुंदरता धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है। पूरी कविता में सुंदर बिंब और उपमाओं का प्रयोग है।

जन-जन का चेहरा [Google – BiharBoard.School]

मुक्तिबोध की कविता 'जन-जन का चेहरा एक' में कवि बताता है कि दुनिया के किसी भी देश, प्रांत या शहर का मनुष्य हो, उसका दुख-दर्द, संघर्ष, प्यार, क्रोध और उम्मीद सब एक जैसे हैं। एशिया, यूरोप, अमेरिका की गलियों से लेकर दुनियाभर की नदियों के किनारे तक, इंसान के चेहरे पर वही तकलीफ़ और वही जज़्बा दिखता है।

कवि कहता है कि शोषक हर जगह एक जैसे होते हैं और जनता का संघर्ष भी हर जगह समान है। दुनिया भर के लोगों की हिम्मत, संघर्ष की आग और सत्य का उजाला सबमें एक-सा है। इसलिए मनुष्य का मूल स्वरूप, उसकी पीड़ा और उसकी शक्ति पूरी दुनिया में एक समान दिखाई देती है।

अधिनायक [Telegram - @BsebNow]

कविता 'अधिनायक' में कवि दिखाते हैं कि आजादी के बाद भी गरीब लोगों की हालत नहीं बदली। हरचरना जैसा बच्चा फटे कपड़ों में राष्ट्रगान गाता है, पर उसे समझ नहीं आता कि 'अधिनायक' आखिर किसे कहा गया है।

कवि पूछते हैं कि लोकतंत्र में कौन वह व्यक्ति है जिसकी इतनी प्रशंसा की जाती है। सत्ता में बैठे लोग खुद को बहुत बड़ा और शक्तिशाली दिखाना चाहते हैं, इसलिए कवि इस छिपी तानाशाही प्रवृत्ति पर कटाक्ष करते हैं।

प्यारे नन्हें बेटे को [Google – BiharBoard.School]

कविता में कवि अपने बेटे और बिटिया के साथ रोज़मर्रा की चीजों में छिपा लोहा खोजता है। बिटिया जल्दी-जल्दी बताती है कि चिमटा, करछुल, साँकल, खंभों की तार, सैफ्टी पिन, साइकिल और कई घरेलू व खेती के औज़ारों में लोहा होता है। वे मिलकर खोजते हैं कि आसपास की लगभग हर उपयोगी चीज़ में लोहा मौजूद है।

कवि अंत में बताता है कि असली "लोहा" मेहनत करने वाले लोग हैं किसान, मजदूर, और वे औरतें जो बोझ और संघर्ष उठाती हैं। उनके अंदर हिम्मत, ताकत और धैर्य का "लोहा" होता है।

हार-जीत [Telegram - @BsebNow]

अशोक वाजपेयी की गद्य-कविता 'हार-जीत' में जनता उत्सव मनाती दिखती है, लेकिन उसे यह नहीं पता कि युद्ध किस बात पर हुआ, कितने सैनिक गए या कितने लौटे। लोग केवल इतना जानते हैं कि "जीत" हुई है, जबकि सच उनसे छिपा रहता है और युद्ध की असली जानकारी कभी सामने नहीं आती।

कविता बताती है कि विजय की घोषणा करने वाले वही लोग हैं जो सत्ता के साथ लौटते हैं। केवल मशकवाला सच जानता है कि असल में जीत नहीं, हार लौट रही है, पर उसकी बात कोई नहीं सुनता। कविता युद्ध–सूचनाओं की अंधकार और जनता की अनभिज्ञता को उजागर करती है।

गाँव का घर [Google – BiharBoard.School]

'गाँव का घर' कविता में कवि ने पुराने गाँव के घरों की सादगी, अनुशासन और अपनापन दिखाया है। बाँस-मिट्टी के घर, चौखट की मर्यादा, बड़ों का सम्मान और पारिवारिक अनुशासन गाँव की पहचान थे। दीवारों पर लगे दूध के निशान और बड़ों के इशारे से चलता घर जीवन की सरलता बताते हैं। समय के साथ गाँव बदल गया है। पंचायती व्यवस्था में ईमानदारी घट गई है। बिजली, टीवी और बनावटी रोशनी आ गई है, पर सच्चा उजाला नहीं रहा। लोकगीत, सर्कस और सांस्कृतिक जीवन समाप्त हो गए हैं। गाँव अब अपनी गरिमा खोकर झगड़ों का स्थान बन गया है।

मेरे प्रिय लेखक / कवि [Telegram - @BsebNow]

मेरे प्रिय लेखक और कवि कबीरदास हैं। वे भक्ति काल के महान संत थे। कबीरदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को सत्य, प्रेम और मानवता का संदेश दिया। उनकी भाषा सरल और प्रभावशाली है, जिसे आम लोग आसानी से समझ सकते हैं। उनके दोहे जीवन की सच्चाई बताते हैं और हमें सही मार्ग दिखाते हैं।

कबीरदास ने आडंबर, जाति-भेद और अंधविश्वास का विरोध किया। उन्होंने ईश्वर को पाने के लिए सच्चे मन और अच्छे कर्म पर बल दिया। उनकी रचनाएँ आज भी उतनी ही उपयोगी हैं जितनी पहले थीं। सरल शब्दों में गहरे विचार कहना ही कबीरदास की सबसे बड़ी विशेषता है, इसलिए वे मेरे प्रिय लेखक और कवि हैं।

टेलीग्राम पर सर्च करें - @BsebNow
टेलीग्राम पर सर्च करें - @BsebNow
Google पर सर्च करें – BiharBoard.School

मेरी प्रिय पुस्तक [Google – BiharBoard.School]

मेरी प्रिय पुस्तक बीजक है, जिसके रचयिता संत कबीरदास जी हैं। यह पुस्तक हिंदू और मुस्लिम दोनों के लिए समान रूप से उपयोगी है। इसमें ईश्वर को पाने के लिए प्रेम, सच्चाई और मानवता पर ज़ोर दिया गया है। कबीरदास जी ने पाखंड, भेदभाव और झूठे आडंबर का विरोध किया है। भाषा सरल और सीधी है, इसलिए हर व्यक्ति इसे आसानी से समझ सकता है।

बीजक हमें सिखाती है कि सभी मनुष्य समान हैं और धर्म का सही अर्थ इंसानियत है। यह आपसी भाईचारे, शांति और सद्भाव का संदेश देती है। इस पुस्तक को पढ़कर मन शुद्ध होता है और सोच सकारात्मक बनती है। इसलिए बीजक मेरी प्रिय पुस्तक है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी / हिन्दी है हम [Telegram - @BsebNow]

हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। यह हमारे देश की एकता, संस्कृति और परंपरा की पहचान है। हिंदी सरल, मधुर और भावनाओं को सीधे व्यक्त करने वाली भाषा है। भारत के अलग-अलग राज्यों में रहने वाले लोग हिंदी के माध्यम से आपस में जुड़ते हैं। सरकारी कामकाज, शिक्षा, साहित्य और जन-संचार में हिंदी का विशेष स्थान है।

हमें हिंदी पर गर्व करना चाहिए और इसका सही प्रयोग करना चाहिए। घर, स्कूल और समाज में हिंदी बोलने व लिखने से इसका सम्मान बढ़ता है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी पहचान और आत्मा है। इसलिए हिंदी का संरक्षण और प्रचार करना हम सभी का कर्तव्य है।

परिश्रम का महत्व / समय का महत्व [Google – BiharBoard.School]

परिश्रम और समय जीवन की सफलता के दो महत्वपूर्ण आधार हैं। बिना परिश्रम के समय व्यर्थ चला जाता है और समय का सही उपयोग किए बिना परिश्रम अधूरा रह जाता है। जो व्यक्ति समय का सही उपयोग करते हुए मेहनत करता है, वही जीवन में आगे बढ़ता है। विद्यार्थी यदि समय पर पढ़ाई करें और नियमित परिश्रम करें, तो सफलता निश्चित मिलती है। किसान, मजदूर और कर्मचारी अपने परिश्रम और समय-पालन से ही परिवार और देश की प्रगति करते हैं। आलस्य और समय की बर्बादी असफलता का कारण बनती है। समय एक बार चला जाए तो वापस नहीं आता, इसलिए हर क्षण का सही उपयोग आवश्यक है। परिश्रम से आत्मविश्वास बढ़ता है और समय से जीवन में अनुशासन आता है। अतः हमें जीवन में परिश्रम और समय दोनों का समान महत्व समझना चाहिए।

भ्रष्टाचार की समस्या / भ्रष्टाचार [Telegram - @BsebNow]

भ्रष्टाचार आज हमारे समाज की एक गंभीर समस्या है। जब कोई व्यक्ति अपने पद या अधिकार का गलत उपयोग करके निजी लाभ लेता है, तो उसे भ्रष्टाचार कहते हैं। यह समस्या राजनीति, प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय व्यवस्था सभी क्षेत्रों में दिखाई देती है। रिश्वत लेना-देना, पक्षपात करना और गलत तरीकों से धन कमाना इसके प्रमुख रूप हैं।

भ्रष्टाचार से देश का विकास रुक जाता है और आम जनता का विश्वास टूटता है। गरीब और ईमानदार लोग सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। योजनाओं का लाभ सही लोगों तक नहीं पहुँच पाता। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कड़े कानून, ईमानदार अधिकारी, जागरूक नागरिक और नैतिक शिक्षा आवश्यक है। यदि हम सभी ईमानदारी अपनाएँ और गलत कामों का विरोध करें, तो भ्रष्टाचार की समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

शिक्षक दिवस [Google – BiharBoard.School]

शिक्षक दिवस हमारे जीवन में शिक्षकों के महत्व को बताने वाला विशेष दिन है। यह हर वर्ष 5 सितंबर को मनाया जाता है। यह दिन भारत के महान शिक्षक और राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती पर मनाया जाता है। शिक्षक हमें सही रास्ता दिखाते हैं और अच्छा इंसान बनाते हैं। वे हमें ज्ञान के साथ-साथ संस्कार भी देते हैं।

शिक्षक हमारे अज्ञान को दूर करते हैं और हमारे भविष्य को उज्ज्वल बनाते हैं। एक अच्छा शिक्षक हमें मेहनत, अनुशासन और ईमानदारी का महत्व सिखाता है। शिक्षक दिवस पर विद्यालयों में कार्यक्रम होते हैं, छात्र अपने शिक्षकों को सम्मान देते हैं। यह दिन हमें यह याद दिलाता है कि शिक्षक समाज और राष्ट्र निर्माण की नींव होते हैं।

वन संरक्षण / पर्यावरण संरक्षण [Telegram - @BsebNow]

वन संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे से जुड़े हुए विषय हैं। वन हमारे पर्यावरण का आधार हैं। पेड़-पौधे हमें शुद्ध हवा, वर्षा, फल, लकड़ी और औषधियाँ देते हैं। वन मिट्टी के कटाव को रोकते हैं और जीव-जंतुओं को आश्रय देते हैं। यदि वन नष्ट होंगे, तो पर्यावरण असंतुलित हो जाएगा।

पर्यावरण संरक्षण का अर्थ है - हवा, पानी, भूमि और जीवों की रक्षा करना। आज बढ़ते प्रदूषण, कटते जंगलों और जलवायु परिवर्तन से पर्यावरण को खतरा है। इसे बचाने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने, जल की बचत करने, प्लास्टिक का कम उपयोग करने और स्वच्छता अपनाने की आवश्यकता है। सरकार के साथ-साथ आम लोगों की जिम्मेदारी भी है कि वे वन और पर्यावरण की रक्षा करें। तभी हमारा भविष्य सुरक्षित रहेगा।

हमारे पावन पर्व [Google – BiharBoard.School]

भारत को पर्वों का देश कहा जाता है। यहाँ अनेक पावन पर्व मनाए जाते हैं, जैसे दीपावली, होली, दशहरा, ईद, क्रिसमस, छठ आदि। ये पर्व हमें खुशी, प्रेम और भाईचारे का संदेश देते हैं। दीपावली अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा देती है। होली आपसी मेल-मिलाप और समानता का पर्व है। दशहरा बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। ईद और क्रिसमस प्रेम, त्याग और मानवता की भावना सिखाते हैं।

पर्वों के अवसर पर लोग एक-दूसरे से मिलते हैं, शुभकामनाएँ देते हैं और मिल-जुलकर खुशियाँ मनाते हैं। ये पर्व हमारी संस्कृति और परंपरा को जीवित रखते हैं। पावन पर्व हमें नैतिक मूल्यों, एकता और सद्भाव का पाठ पढ़ाते हैं। इसलिए हमारे जीवन में पर्वों का विशेष महत्व है।

चुनाव प्रक्रिया [Telegram - @BsebNow]

चुनाव प्रक्रिया लोकतंत्र की सबसे महत्वपूर्ण व्यवस्था है। इसके द्वारा जनता अपने प्रतिनिधि स्वयं चुनती है। भारत में चुनाव एक निश्चित नियम और कानून के अनुसार होते हैं। चुनाव की घोषणा होने के बाद मतदाता सूची तैयार की जाती है। योग्य उम्मीदवार अपना नामांकन पत्र भरते हैं। इसके बाद प्रचार का समय आता है, जिसमें उम्मीदवार जनता के सामने अपने विचार रखते हैं।

मतदान के दिन मतदाता गुप्त रूप से अपने मत का प्रयोग करते हैं। आजकल इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM) से मतदान होता है, जिससे पारदर्शिता बनी रहती है। मतदान के बाद मतगणना होती है और परिणाम घोषित किए जाते हैं। चुनाव प्रक्रिया से जनता को अपनी सरकार चुनने का अधिकार मिलता है। निष्पक्ष और ईमानदार चुनाव देश के विकास और मजबूत लोकतंत्र की नींव होते हैं।

महिला सशक्तिकरण / नारी सशक्तिकरण [Google – BiharBoard.School]

महिला सशक्तिकरण या नारी सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को शिक्षा, अधिकार और आत्मनिर्भरता प्रदान करना। समाज के विकास में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। जब नारी शिक्षित और सशक्त होती है, तो पूरा परिवार और समाज आगे बढ़ता है। आज महिलाएँ शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, खेल और प्रशासन जैसे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं।

फिर भी कई जगह महिलाओं को भेदभाव, हिंसा और अवसरों की कमी का सामना करना पड़ता है। इसे दूर करने के लिए बेटियों की शिक्षा, समान अधिकार, स्वास्थ्य सुविधा और सुरक्षा पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। सरकार द्वारा बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ, महिला आरक्षण जैसी योजनाएँ इसी दिशा में कदम हैं। सच्चा नारी सशक्तिकरण तभी संभव है जब समाज में पुरुष और महिला दोनों को समान सम्मान और अवसर मिलें।

आपका प्रिय खेल / खेल का महत्व [Telegram - @BsebNow]

खेल हमारे जीवन का बहुत महत्वपूर्ण भाग है। खेलों से शरीर स्वस्थ रहता है और मन प्रसन्न होता है। नियमित खेल खेलने से अनुशासन, समय का सदुपयोग, सहयोग और आत्मविश्वास की भावना विकसित होती है। खेल हमें हार-जीत को समान रूप से स्वीकार करना सिखाते हैं। पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी आवश्यक हैं, क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है।

मेरा प्रिय खेल क्रिकेट है। यह एक लोकप्रिय और रोचक खेल है। क्रिकेट खेलने से शरीर की अच्छी कसरत होती है और टीम भावना बढ़ती है। इस खेल में धैर्य, एकाग्रता और रणनीति की आवश्यकता होती है। मुझे अपने मित्रों के साथ क्रिकेट खेलना बहुत अच्छा लगता है। खेल हमें स्वस्थ, सक्रिय और अनुशासित बनाते हैं, इसलिए जीवन में खेलों का विशेष महत्व है।

लोकतंत्र की दशा और दिशा [Google – BiharBoard.School]

लोकतंत्र वह शासन व्यवस्था है जिसमें जनता को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र की दशा की बात करें तो आज हमारे देश में चुनाव, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और न्यायपालिका जैसी मजबूत व्यवस्थाएँ मौजूद हैं। आम नागरिक अपने मताधिकार के माध्यम से सरकार चुनता है। परंतु इसके साथ-साथ भ्रष्टाचार, धनबल-बाहुबल का प्रयोग, राजनीति में गिरता नैतिक स्तर और जनता की कम भागीदारी जैसी समस्याएँ भी लोकतंत्र की दशा को कमजोर करती हैं।

लोकतंत्र की दिशा तभी सही हो सकती है जब जनता जागरूक बने। ईमानदार नेताओं का चुनाव, शिक्षा का प्रसार, कानून का पालन और जिम्मेदार नागरिकता लोकतंत्र को मजबूत बनाती है। यदि सरकार और जनता दोनों अपने कर्तव्यों को समझें, तो लोकतंत्र सही दिशा में आगे बढ़ेगा और देश का विकास सुनिश्चित होगा।

होली [Telegram - @BsebNow]

होली भारत का एक प्रमुख और रंगों का त्योहार है। यह फाल्गुन महीने में मनाया जाता है। इस दिन लोग एक-दूसरे को रंग और गुलाल लगाकर खुशी मनाते हैं। होली बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। इस त्योहार से जुड़ी प्रह्लाद और होलिका की कथा प्रसिद्ध है, जो सच्चाई और भक्ति की शक्ति को बताती है।

होली के दिन लोग पुराने गिले-शिकवे भूलकर गले मिलते हैं। घरों में गुझिया, दही-बड़े और मिठाइयाँ बनती हैं। बच्चे, बड़े और बूढ़े सभी मिलकर उत्सव मनाते हैं। होली हमें प्रेम, भाईचारे और समानता का संदेश देती है। यह त्योहार समाज में मेल-मिलाप और खुशहाली बढ़ाता है।

दुर्गा पूजा [Google – BiharBoard.School]

दुर्गा पूजा भारत का एक प्रमुख और पवित्र त्योहार है। यह विशेष रूप से बंगाल, बिहार, झारखंड और असम में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। यह पर्व देवी दुर्गा की महिषासुर पर विजय का प्रतीक है, जो बुराई पर अच्छाई की जीत को दर्शाता है। दुर्गा पूजा हर वर्ष आश्विन महीने में होती है और नौ दिनों तक चलती है।

इस दौरान लोग पंडाल सजाते हैं, देवी दुर्गा की सुंदर मूर्तियाँ स्थापित की जाती हैं और विधि-विधान से पूजा की जाती है। लोग नए कपड़े पहनते हैं, एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं और प्रसाद बाँटते हैं। दुर्गा पूजा हमें साहस, शक्ति और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। यह त्योहार समाज में एकता, भाईचारे और श्रद्धा का भाव बढ़ाता है।

छठ पूजा [Telegram - @BsebNow]

छठ पूजा बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश का प्रमुख लोक पर्व है। यह पर्व सूर्य देव और छठी मैया की आराधना के लिए मनाया जाता है। छठ पूजा वर्ष में दो बार, चैत्र और कार्तिक माह में होती है। यह चार दिनों तक चलने वाला पर्व है। पहले दिन नहाय-खाय होता है, दूसरे दिन खरना, तीसरे दिन संध्या अर्घ्य और चौथे दिन उषा अर्घ्य दिया जाता है।

इस पर्व में व्रती कठिन व्रत रखते हैं और स्वच्छता, पवित्रता तथा अनुशासन का विशेष ध्यान रखते हैं। नदी, तालाब या जलाशय के किनारे अर्घ्य दिया जाता है। छठ पूजा प्रकृति पूजा का सुंदर उदाहरण है। यह पर्व हमें सूर्य के महत्व, पर्यावरण संरक्षण और सामूहिक एकता का संदेश देता है।

ईद [Google – BiharBoard.School]

ईद मुसलमानों का एक प्रमुख और पवित्र त्योहार है। यह खुशी, भाईचारे और प्रेम का प्रतीक है। ईद रमज़ान के पवित्र महीने के बाद मनाई जाती है। इस दिन लोग सुबह जल्दी उठकर स्नान करते हैं, नए कपड़े पहनते हैं और मस्जिद में ईद की नमाज़ अदा करते हैं। नमाज़ के बाद लोग एक-दूसरे को गले लगाकर "ईद मुबारक" कहते हैं।

ईद के दिन गरीबों और जरूरतमंदों को दान दिया जाता है, ताकि वे भी इस खुशी में शामिल हो सकें। घरों में सेवइयाँ और तरह-तरह की मिठाइयाँ बनाई जाती हैं। रिश्तेदारों और दोस्तों से मुलाकात होती है। ईद हमें आपसी प्रेम, दया, समानता और सामाजिक एकता का संदेश देती है।

छात्र जीवन / छात्र और अनुशासन [Telegram - @BsebNow]

छात्र जीवन मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण चरण होता है। इसी समय व्यक्ति का चरित्र, सोच और भविष्य की दिशा तय होती है। छात्र जीवन में पढ़ाई के साथ-साथ अच्छे संस्कार सीखना बहुत जरूरी होता है। विद्यार्थी को समय का सही उपयोग करना चाहिए, बड़ों का सम्मान करना चाहिए और मेहनत की आदत डालनी चाहिए। यही जीवन आगे चलकर सफलता की नींव बनता है।

छात्र और अनुशासन का आपस में गहरा संबंध है। अनुशासन के बिना छात्र जीवन सफल नहीं हो सकता। समय पर उठना, नियमित अध्ययन करना, नियमों का पालन करना और गुरुजनों की बात मानना अनुशासन के उदाहरण हैं। अनुशासित छात्र लक्ष्य पर केंद्रित रहता है और गलत रास्तों से दूर रहता है। इसलिए कहा जाता है कि अनुशासन ही छात्र जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है।

शिक्षित बेरोजगारी की समस्या [Google – BiharBoard.School]

शिक्षित बेरोजगारी आज हमारे देश की एक गंभीर समस्या है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति पढ़ा-लिखा और योग्य होने के बाद भी उसे उसकी योग्यता के अनुसार काम नहीं मिलता। हर वर्ष कॉलेज और विश्वविद्यालयों से लाखों छात्र डिग्री लेकर निकलते हैं, लेकिन नौकरी के अवसर सीमित होते हैं। शिक्षा और रोजगार के बीच तालमेल न होने के कारण यह समस्या और बढ़ जाती है।

शिक्षित बेरोजगारी से युवाओं में निराशा, तनाव और असंतोष बढ़ता है, जिससे समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसका समाधान व्यावहारिक और रोजगारपरक शिक्षा, कौशल विकास, स्वरोजगार को बढ़ावा तथा उद्योगों की स्थापना से किया जा सकता है। यदि सरकार और समाज मिलकर प्रयास करें, तो इस समस्या पर काफी हद तक नियंत्रण पाया जा सकता है।

महंगाई की समस्या [Telegram - @BsebNow]

महंगाई आज की सबसे बड़ी सामाजिक और आर्थिक समस्याओं में से एक है। जब रोज़मर्रा की वस्तुओं जैसे अनाज, सब्ज़ी, तेल, दवा और ईंधन के दाम लगातार बढ़ते हैं, तो आम लोगों का जीवन कठिन हो जाता है। सीमित आय वाले परिवारों के लिए घर चलाना मुश्किल हो जाता है। महंगाई का सबसे अधिक प्रभाव गरीब और मध्यम वर्ग पर पड़ता है। महंगाई के मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि, जमाखोरी, भ्रष्टाचार, बढ़ती मांग और कम उत्पादन हैं। इससे लोगों की बचत कम होती है और कर्ज़ बढ़ता है। सरकार को चाहिए कि वह आवश्यक वस्तुओं के दाम नियंत्रित करे, जमाखोरी पर रोक लगाए और रोजगार के अवसर बढ़ाए। यदि महंगाई पर समय रहते नियंत्रण नहीं किया गया, तो समाज में असंतोष और गरीबी बढ़ सकती है।

प्राकृतिक संसाधन [Google – BiharBoard.School]

प्राकृतिक संसाधन वे साधन हैं जो हमें प्रकृति से प्राप्त होते हैं। इनमें जल, वायु, मिट्टी, वन, खनिज, सूर्य का प्रकाश और जीव-जंतु शामिल हैं। ये संसाधन मानव जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। जल के बिना जीवन संभव नहीं है, वायु हमें सांस लेने में मदद करती है और मिट्टी से हमें भोजन मिलता है। वन हमें लकड़ी, औषधि और शुद्ध वातावरण प्रदान करते हैं। खनिजों से उद्योग चलते हैं और रोजगार मिलता है।

आज मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक और गलत उपयोग कर रहा है, जिससे पर्यावरण प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इसलिए हमें प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना चाहिए। जल बचाना, पेड़ लगाना और प्रदूषण कम करना हमारा कर्तव्य है। प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करके ही हम आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं।

भूकंप [Telegram - @BsebNow]

भूकंप एक प्राकृतिक आपदा है, जिसमें पृथ्वी की सतह अचानक हिलने लगती है। यह पृथ्वी की अंदरूनी प्लेटों के खिसकने से उत्पन्न होता है। जब ये प्लेटें आपस में टकराती या दूर जाती हैं, तो ऊर्जा निकलती है और भूकंप आता है। भूकंप से इमारतें गिर जाती हैं, सड़कें टूट जाती हैं और जन-धन की भारी हानि होती है।

भूकंप का प्रभाव कुछ सेकंड से लेकर कई मिनट तक हो सकता है। इससे लोगों में भय और अफरा-तफरी फैल जाती है। भूकंप से बचाव के लिए मजबूत भवन निर्माण, खुले स्थान में जाना और आपदा प्रबंधन की जानकारी होना आवश्यक है। हमें भूकंप के समय घबराने के बजाय सावधानी बरतनी चाहिए। सही तैयारी और जागरूकता से भूकंप से होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

प्रदूषण [Google – BiharBoard.School]

प्रदूषण आज की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। जब हवा, पानी, मिट्टी और वातावरण में हानिकारक पदार्थ मिल जाते हैं, तो उसे प्रदूषण कहते हैं। प्रदूषण के मुख्य प्रकार हैं- वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण और भूमि प्रदूषण। कारखानों का धुआँ, वाहनों की बढ़ती संख्या, पेड़ों की कटाई और गंदा कचरा प्रदूषण को बढ़ाते हैं। इससे मनुष्य, पशु-पक्षी और पौधों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। लोग बीमार पड़ते हैं और प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाता है। प्रदूषण को रोकने के लिए हमें अधिक पेड़ लगाने चाहिए, वाहनों का कम उपयोग करना चाहिए, साफ ऊर्जा का प्रयोग करना चाहिए और कचरे का सही निपटान करना चाहिए। यदि हम आज सावधान नहीं हुए, तो भविष्य बहुत कठिन हो जाएगा। इसलिए प्रदूषण से बचाव हम सबकी जिम्मेदारी है।

वसंत ऋतु [Telegram - @BsebNow]

वसंत ऋतु को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। यह सर्दी और गर्मी के बीच आती है। इस ऋतु में मौसम न अधिक ठंडा होता है और न अधिक गर्म। चारों ओर हरियाली छा जाती है। पेड़ों में नई पत्तियाँ आती हैं और फूल खिल उठते हैं। कोयल की मधुर आवाज़ मन को आनंद देती है। खेतों में फसलें लहलहाने लगती हैं, जिससे किसानों में खुशी होती है।

वसंत ऋतु में लोग अधिक सक्रिय और प्रसन्न रहते हैं। इस समय कई त्योहार भी मनाए जाते हैं, जैसे बसंत पंचमी और होली। यह ऋतु स्वास्थ्य के लिए भी अच्छी मानी जाती है। कुल मिलाकर वसंत ऋतु प्रकृति की सुंदरता, आनंद और उत्साह का संदेश देती है।

स्वच्छ भारत अभियान [Google – BiharBoard.School]

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा 2 अक्टूबर 2014 को महात्मा गांधी की जयंती पर शुरू किया गया एक राष्ट्रीय अभियान है। इसका मुख्य उद्देश्य देश को साफ-सुथरा बनाना और लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाना है। इस अभियान के अंतर्गत खुले में शौच को समाप्त करने, शौचालयों के निर्माण, कचरे के सही निपटान और साफ-सफाई की आदतें अपनाने पर जोर दिया गया है।

स्वच्छता से न केवल हमारा वातावरण सुंदर बनता है, बल्कि बीमारियाँ भी कम होती हैं। गंदगी से अनेक रोग फैलते हैं, इसलिए साफ-सफाई बहुत आवश्यक है। इस अभियान में सरकार के साथ-साथ आम जनता की भागीदारी भी जरूरी है। यदि हर नागरिक अपने घर, स्कूल और आसपास सफाई रखे, तो देश सचमुच स्वच्छ बन सकता है। स्वच्छ भारत ही स्वस्थ भारत की नींव है।

बिहार में शिक्षा [Telegram - @BsebNow]

बिहार में शिक्षा का बहुत पुराना और गौरवशाली इतिहास रहा है। प्राचीन काल में नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालय यहाँ थे, जहाँ दूर-दूर से विद्यार्थी पढ़ने आते थे। आज के समय में भी बिहार में शिक्षा के क्षेत्र में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। सरकार द्वारा सरकारी स्कूलों में मुफ्त किताबें, छात्रवृत्ति, साइकिल योजना और मध्यान्ह भोजन जैसी योजनाएँ चलाई जा रही हैं।

हालाँकि अब भी कई समस्याएँ हैं, जैसे विद्यालयों की कमी, शिक्षकों का अभाव और ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षा। फिर भी छात्र मेहनती हैं और प्रतियोगी परीक्षाओं में बिहार के विद्यार्थी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। यदि शिक्षा व्यवस्था को और मजबूत किया जाए, तो बिहार निश्चित रूप से प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेगा।

ग्राम पंचायत [Google – BiharBoard.School]

ग्राम पंचायत गाँव की सबसे छोटी और महत्वपूर्ण स्थानीय शासन व्यवस्था है। यह लोकतंत्र की नींव मानी जाती है। ग्राम पंचायत का गठन गाँव के लोगों द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों से होता है, जिनमें मुखिया, उपमुखिया और वार्ड सदस्य शामिल होते हैं। इसका मुख्य कार्य गाँव के विकास से जुड़ी योजनाओं को लागू करना है। सड़क, नाली, पेयजल, स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास जैसी सुविधाओं की देखरेख ग्राम पंचायत करती है। यह गरीबों और जरूरतमंदों को सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने में भी मदद करती है। ग्राम सभा के माध्यम से लोग अपनी समस्याएँ रखते हैं और समाधान पर चर्चा होती है। ग्राम पंचायत ग्रामीण विकास, पारदर्शिता और जनभागीदारी को बढ़ावा देती है। इस प्रकार ग्राम पंचायत गाँव को आत्मनिर्भर और विकसित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आरक्षण नीति [Telegram - @BsebNow]

आरक्षण नीति भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण सामाजिक नीति है। इसका उद्देश्य समाज के पिछड़े, कमजोर और वंचित वर्गों को शिक्षा, नौकरी और राजनीति में उचित अवसर देना है। लंबे समय तक कुछ वर्ग सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े रहे, इसलिए उन्हें आगे बढ़ाने के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को इसका लाभ मिलता है।

आरक्षण नीति से कई लोगों को पढ़ाई और रोजगार का अवसर मिला है, जिससे समाज में समानता बढ़ी है। हालांकि कुछ लोग इसका विरोध भी करते हैं, लेकिन सही तरीके से लागू होने पर यह सामाजिक न्याय को मजबूत बनाती है। कुल मिलाकर, आरक्षण नीति का उद्देश्य सभी नागरिकों को समान अवसर देकर देश के संतुलित विकास को बढ़ावा देना है।

टेलीग्राम पर सर्च करें - @BsebNow
Google पर सर्च करें – BiharBoard.School
Google पर सर्च करें – BiharBoard.School
टेलीग्राम पर सर्च करें - @BsebNow